वर्ष:2, अंक: 6, जून 2018

जे-7, श्रीराम नगर, रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक

CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

आप सबने गर्मी की छुट्टियां खूब मज़े लकर मनाई होंगी. कुछ बच्चे घूमने-फिरने गए होंगे. कुछ ने घर पर ही समय बिताया होगा. अब दोबारा स्कूल जाने का समय आ रहा है. नई कक्षा, नई पुस्तकें और नए मित्र भी आपको मिलेंगे. कितना मज़ा आयेगा. स्कूल के पहले दिन के अपने अनुभव हमें ज़रूर लिखना. आपके अनुभव हम प्रकाशित करेंगे. इस अंक में हम बच्चों की बनाई कामिक्स को विशेष रूप से प्रकाशित कर रहे हैं. शिक्षकों से अनुरोध है कि इस प्रकार के नवाचार यदि आपने भी किए हों तो उन्हें किलोल के लिए अवश्य भेजें. आपकी रचनाओं का हमें सदैव ही इंतज़ार रहता है. किलोल के लिये रचनाएं dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेजते रहिये. हमेशा की तरह यह अंक भी http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को मेरा प्यार.

आलोक शुक्ला

चार-मित्र

लेखिका - अणिमा उपाध्याय

एक समय की बात है एक गांव में चार मित्र रहते थे. उनमें से तीन बहुत पढ़े-लिखे व अपने विषय के विव्दान थे, परन्तु चौथा मित्र अपढ़ व अति साधारण किसान था. एक दिन चारों मित्रों ने सोचा कि क्यों न साथ-साथ जंगल की सैर की जाय. वे बड़े सवेरे ही हर्षपूर्वक अपने घरों से निकल पड़े व हंसते-खिलखिलाते बचपन की बातें करते जंगल की ओर चल पड़े.

रास्ते में उन्हें किसी मृत जानवर की अस्थियां बिखरी हुई दिखीं. कुतूहलवश वे वहीँ रुककर उसकी जांच पड़ताल करने लगे. उनमें से पहला मित्र अस्थि-विशेषज्ञ था. उसने कहा, “मुझे यह अस्थियां किसी मृत सिंह की प्रतीत होती हैं.” अपने ज्ञान

को परखने का इससे अच्छा मौका फिर नहीं मिलेगा, यह सोच उसने फटाफट सभी अस्थियां एकत्रित करीं व उन्हें जोड़ कर एक शेर का पिंजर बना कर खड़ा कर दिया. सभी उसकी क्षमता पर बहुत प्रसन्न हुये.

तब दूसरे मित्र ने कहा मैं इसे मांस-मज्जा पहना सकता हूँ. इस पर बाकी दोनों ने सहमति देते हुये उसे प्रोत्साहित किया, किन्तु चौथे अपढ़ मित्र ने उन्हें ऐसा करने से रोका. उसकी बात न सुनते हुए दूसरे मित्र ने उसे मांस-मज्जा पहना कर एक पूर्ण परन्तु मृत सिंह में परिवर्तित कर दिया.

अब तीसरे मित्र को अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना था. चौथे मित्र को वे सब मूर्ख व अज्ञानी समझते थे. सो उसका मज़ाक उड़ाते हुए तीसरे मित्र ने कहा – "मित्र तुम तो कुछ कर के दिखा नहीं सकते, परन्तु मैं इसे जीवित शेर बना सकता हूँ". चौथे मित्र ने उन्हें बिना किसी आत्म-सुरक्षा के न सिर्फ़ ऐसा करने से रोका बल्कि शेर के जीवित होते ही उसके उनपर हमला करने की चेतावनी भी दी, जिसे उन तीनों ने अनसुना कर दिया.

तब चौथे मित्र ने उनसे आग्रह किया कि शेर में प्राण फूंककर पुनः जीवित करने के पहले उसे किसी उंचे वृक्ष पर चढ़ जाने का मौका दे देवें. उसके उपरांत ही वे अपने ज्ञान की परीक्षा लेवें. उसकी बात सुन तीनों मित्र हंसते हुये बोले - तुमसे ऐसी ही बात की हमे अपेक्षा थी, जाओ और किसी उंचे वृक्ष पर चढ़ कर "हमारा करिश्मा देखो."

भारी मन से चौथा मित्र पास के एक उंचे व मज़बूत पेड़ पर चढ़ गया. जैसे ही वह वृक्ष पर चढ़ा तीसरे मित्र ने उस शेर में प्राण फूंक दिए. जीवित होते ही वह शेर उन तीनों पर झपटा. इसके पहले कि वे अपनी कामयाबी का जश्न मना पाते वह भूखा शेर उन्हें मार कर खा गया. वृक्ष के ऊपर से चौथा मित्र अपने तीनो मित्रों की दुर्दशा पर बहुत दुखी हुआ. इतना विव्दान होने के बावज़ूद उन तीनो का अपने ज्ञान के घमंड व दिखावे की वजह से दुखद अंत हुआ.

मिष्टी

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

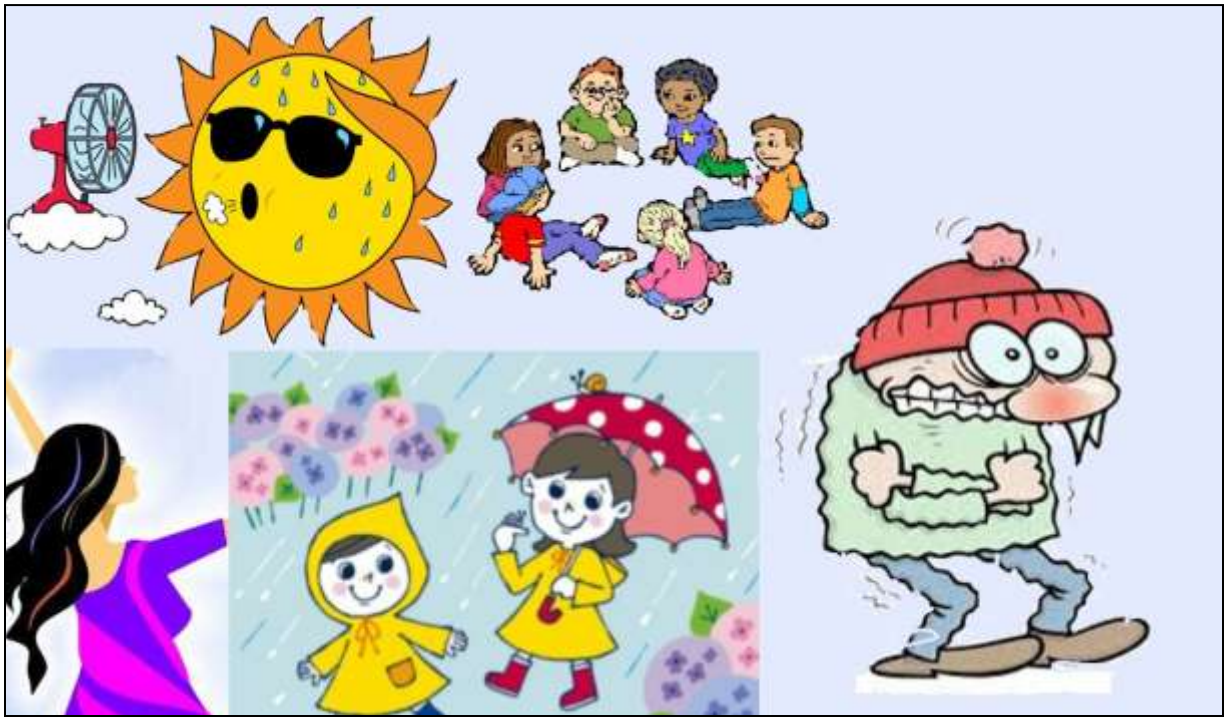

एक बार की बात है, गर्मियों के दिन थे. मिष्टी अपनी मम्मी के साथ बाजार गई थी. शाम के पाँच बज रहे थे फिर भी धूप बहुत तेज थी और काफी गर्मी थी. मिष्टी गर्मी से परेशान हो गई थी. उसकी सुंदर सी फ़्रॉक पसीने से गीली हो गई थी. उसने मम्मी से जल्दी घर वापस चलने को कहा. मिष्टी रास्ते भर मम्मी से शिकायत करती रही – "यह गर्मी का मौसम मुझे बिलकुल पसंद नहीं, इससे तो अच्छा बरसात का मौसम है. बरसात में मैं कागज की नाव बनाकर उसे बहाती हूं." घर आकर वह जल्दी से कमरे मे कूलर चालू करके बैठ गई. मम्मी ने मिष्टी को गर्मी से परेशान देखकर ठंडीठंडी आइसक्रीम खाने के लिए दी-. मिष्टी आइसक्रीम पाकर खुश हो गई.

कुछ दिनों बाद बरसात शुरू हो गई. मिष्टी का स्कूल भी खुल गया. बारिश होने पर वह और उसके दोस्त कागज़ की नाव बनाते और उसे पानी में बहाते. एक दिन

सुबह से ही बहुत तेज बारिश हो रही थी. मिष्टी कहीं बाहर खेलने नहीं जा सकी. उसके सारे दोस्त भी बारिश में बाहर नहीं आ सके. मिष्टी उस दिन घर पर बैठे-बैठे बोर हो गई. अगली सुबह वह स्कूल जाने के लिए वह रेनकोट पहनकर निकल तो गई लेकिन सड़कों पर चारों तरफ पानी और कीचड़ था. वह कीचड में फिसलकर गिर पड़ी. उसके कपड़े और बस्ता गीले हो गए. वह घर आकर रोने लगी. उसने कहा - "मम्मी यह बरसात का मौसम कब खत्म होगा. मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता. मैं खेलने भी नहीं जा पाती. कितना गंदा है यह मौसम. इससे तो अच्छा है कि ठंड आ जाए और इस कीचड़ और पानी से छुटकारा मिले.'' मम्मी ने कहा - "बस एक-दो महीने की बात है बेटा. फिर तो ठंड का ही मौसम आएगा. मिष्टी का मूड ठीक करने के लिए मम्मी ने उसे चटनी के साथ गरमागरम पकौड़े- खाने के लिए दिए.

देखते ही देखते बरसात का मौसम भी बीत गया. ठंड बढ़ने लगी. मिष्टी को लग रहा था कि उसे इस मौसम मे कोई तकलीफ नहीं होगी. वह आराम से गरम कपड़े पहनकर खेल सकती है. पर दिसम्बर का महीना आते ही कड़ाके की ठंड पड़ने लगी. बाहर निकलते ही ठंड से हाथ पैर सुन्न होने लगते थे. लगता था सिर्फ घर के अंदर रजाई में ही घुसकर बैठे रहो. सुबह-सुबह स्कूल जाने के लिए मिष्टी का उठने का ही मन नहीं करता था. पर स्कूल जाना तो जरूरी था. ठंडे पानी को देखकर ही वह डर जाती. नहाते हुए उसके दाँत कटकटाने लगते. अब मिष्टी सोच रही थी कि इससे तो अच्छा गर्मी और बरसात का ही मौसम था. कम से कम मैं गर्मियों में ठण्डी आइसक्रीम तो खाती थी. बरसात में कागज की नाव चलाने में कितना मजा आता था.

उसने यह बात मम्मी को बतायी तो मम्मी ने कहा - "मिष्टी, हमारे लिए सारे मौसम अच्छे हैं. यदि कोई एक ही मौसम रहे तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ जाएगा. मौसम चक्र के कारण ही खेती हो पाती है. यदि खेती समय पर नहीं होगी तो हमें अनाज कहाँ से मिलेगा?" अब यह बात मिष्टी को भी अच्छी तरह समझ में आ गई फिर उसने दोबारा मौसम को लेकर कोई शिकायत नहीं की.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिए कु. दिलेश्वरी पाल का बनाया यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर जो कहानियां प्राप्त हुई हैं उन्हें हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

मेरी चित्रकार बिटिया

लेखक - रामनारायण प्रधान उ.व.शि.पूर्व मा.शाला कोथारी

एक शिक्षक हर छात्र को उसके जन्मदिन पर सामने बुलाकर और कक्षा के सभी बच्चों के साथ हैप्पीबर्थडे गाकर शुभकामना देते थे. एक दिन शिक्षक के कक्षा में प्रवेश करते ही सभी बच्चे समवेत स्वर में हैप्पी बर्थडे गाने लगे. आज शिक्षक का जन्मदिन था. सभी बच्चे फूल, पेन आदि गिफ्ट देने लगे. तभी एक छात्रा ने शर्माते हुए एक चार्ट पेपर दिया. शिक्षक ने जब उसे खोलकर देखा तो भावविभोर हो गये. आंखें भर आईं. चार्ट मे एक ओर शिक्षक को पेंटिंग बोर्ड पर चित्र बनाते

दिखाया गया था. दूसरी ओर दौड़ते हुए घोड़े का चित्र था. आसमान में पक्षियों और बादलों को उन्मुक्त भाव से उड़ते हुए दर्शाया गया था. दाहिने किनारे पर सूर्य अभी उदय हुआ ही हुआ था. पूरा दृश्य शिक्षक को प्रकृति के समान निःस्वार्थ भाव से सेवा करने की शुभकामनाएं देता दिखाई दे रहा था. शिक्षक संभलते हुए दीपिका को सामने बुलाकर धन्यवाद कहा. सभी बच्चे भी भावुक हो गये.

शिक्षक ने चित्रकला, साहित्य लेखन, हस्तकला, खेलकूद आदि का महत्व बताते हुए सहसंज्ञनात्मक क्षेत्र में सभी को भाग लेने के लिए प्रेरित किये. शिक्षक ने कहा कि सभी बच्चों को इस दृश्य को देखकर एक कहानी लिखकर लाना है. श्रेष्ठ रचना लाने वाले को और दीपिका को स्वतंत्रता दिवस पर उचित ईनाम और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जायेगा.

कुछ दिन बाद ऊर्जा मंत्रालय व्दारा ऊर्जा संरक्षण पर चित्रकला प्रतियोगिता हुई. दीपिका पूरे विद्यालय में प्रथम आई. सभी ने दीपिका को शुभकामनाएं दीं. शिक्षक का प्रोत्साहन बच्चों के लिए मार्गदर्शन का काम करता है. शिक्षक अपनी क्षमता से कठिन विषय को भी सरल बना देते हैं.

<u>जादुई पेंसिल</u>

लेखिका - कु. अंजुला रीना, कक्षा आठवीं

एक वैभव नाम का पेंटर था. वह हमेशा पेंटिंग करता था, पर उसके पास वह सारी चीजें नहीं थी जिसकी उसे जरूरत होती थी. वह अपनी कॉपी में ही तस्वीरें पेंसिल से बनाता था. उसकी मां उसे हर खुशी देना चाहती थी, मगर उसके पास पैसे नहीं थे. वह जो कुछ थोड़ा बहुत कमाती, उस पैसे से राशन लाती थी. वैभव के पिता नहीं थे. वैभव धीरेधीरे बड़ा होने लगा-. उसकी मां अब बूढ़ी हो चुकी थी. वैभव पास के गांव में जाकर काम करता और शाम तक लौट आता था.

एक दिन रास्ते में उसे एक पेंसिल मिली. वह उसे घर ले आया. फिर वह अपनी पुरानी कॉपी को निकाल कर लाया और खाट पर बैठकर कॉपी पर चित्र बनाने लगा. उसने उस पेंसिल से एक चिड़िया बनायी. जैसे ही चित्र पूरा हुआ, उसमें से चिड़िया निकलकर साक्षात उसके सामने आ गई. यह देखकर वैभव हैरान रह गया. वैभव सवेरे फिर काम के लिए निकला. रास्ते में उसने एक दुकान से एक कोरा कागज लिया. वह जंगल में जाकर, उस कोरे कागज पर चित्र बनाने लगा. उसने एक घोड़ा, बादल, सूरज, चिड़िया, घास बनाये. चित्र बनते ही चित्र की सारी वस्तुएं तुरंत सामने आ गईं. वह एक बल्कि जादुई पेंसिल थी. अब वैभव जादूई पेंसिल से आपनी सब जरूरतें पूरी करने लगा. वह और लोगों की मदद भी करता था. कहते हैं आज भी वह पेंसिल उस घर में है. पर वहां अब कोई नहीं रहता. वह पेंसिल जमीन के नीचे दब गई है.

अब हम दिलकेश मधुकर जी का भेजा गया चित्र अगले अंक की कहानी लिखने के लिये दे रहे हैं. इस चित्र पर कहानी लिखकर जल्दी से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दो. सभी अच्छी कहानियां हम प्रकाशित करेंगे –

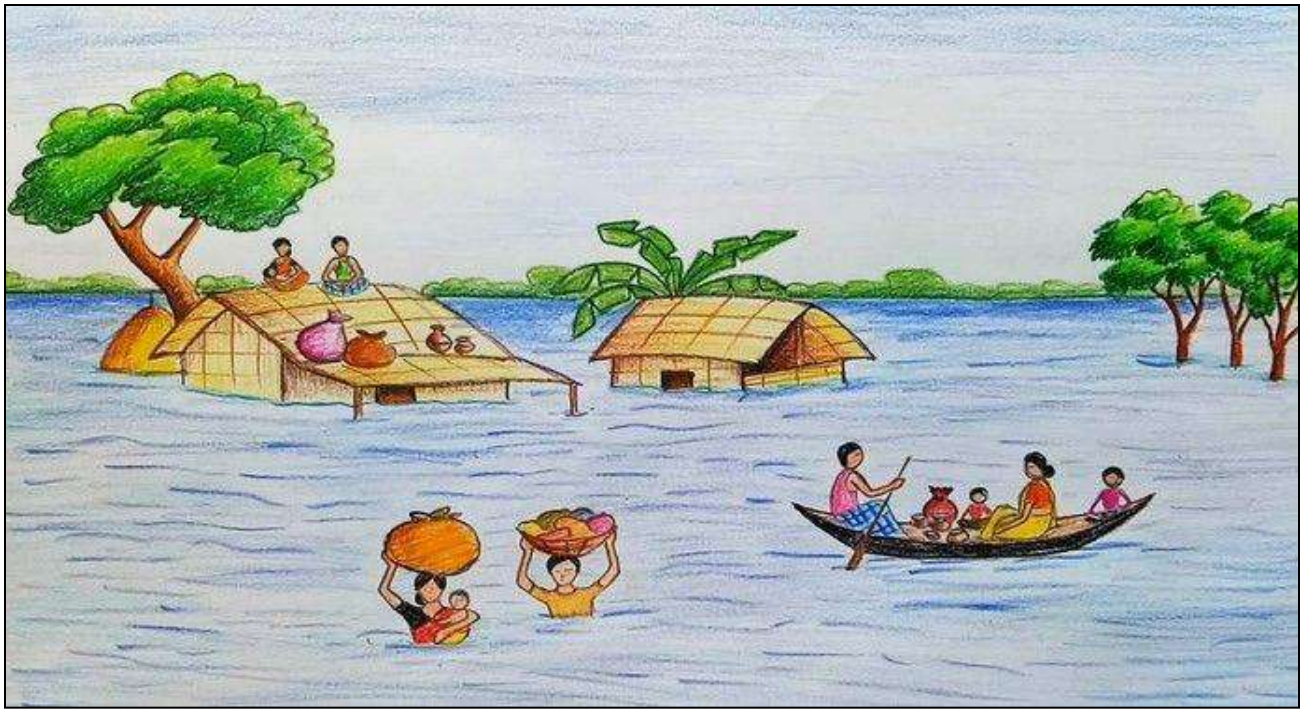

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको नीचे दी गई अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी-

आलसी किसान

बहुत समय पहले की बात है एक गांव में एक .किसान अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता थाउसके पास भगवान का दिया सब .उसकी ज़िंदगी बेहद ख़ुशहाल थी . पत्नी सुशील-सुंदर .कुछ था, होशियार बच्चे, खेतउसकी ज़मीन भी .पैसे थे-ज़मीन-बेहद उपजाऊ थी, जिसमें वो जो चाहे फसल उगा सकता थालेकिन एक समस्या . थी कि वो ख़ुद बहुत ही ज़्यादा आलसी थाउसकी .कभी काम नहीं करता था . समझा कर थक गई थी कि अपना काम ख़ुद करो-पत्नी उसे समझा, खेत पर जाकर देखो, लेकिन वो कभी काम नहीं करता थावो कहता ., "मैं कभी काम नहीं करूंगा." उसकी पत्नी उसके अलास्य से बेहद परेशान रहती थी, लेकिन वो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती थी एक दिन एक साधु .किसान के घर आया और किसान ने उसका ख़ूब आदर साधु .ख़ुश होकर सम्मानपूर्वक उसकी सेवा की .सत्कार किया-किसान की सेवा से बेहद प्रसन्न हुआ और ख़ुश होकर साधु ने कहा कि "मैं तुम्हारे सम्मान व आदर से बेहद ख़ुश हूं, तुम कोई वरदान मांगो." किसान को तो मुंहमांगी मुराद मिल गईउसने कहा ., "बाबा, कोई ऐसा वरदान दो कि मुझे ख़ुद कभी कोई काम न करना पड़ेआदमी दे दो आप मुझे कोई ऐसा ., जो मेरे सारे काम कर दिया करे."

इस कहानी को पूरा करके हमें जो रचनाएं मिलीं हैं उन्हें हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं -

एक

लेखिका -कु. रोशनी मरकाम

साधु ने किसान को वरदान दे दिया जाओ तुम्हारी इच्छा पूरी हो -. साधु के जाने के बाद एक आदमी आया और कहने लगा मैं क्या काम करूं? किसान ने कहा - जाकर खेत में अनाज बो आओ. उस आदमी ने कहा - मेरी एक शर्त है. मैं हमेशा काम करूंगा, कभी भी आराम नहीं करूंगा. मैं रुका तो वापस चला जाऊंगा. किसान ने शर्त मान ली. वह आदमी सारे काम तुरंत कर दिया करता था. काम पूरा करके वह तुरंत दूसरा काम मांगता था. किसान के पास अब कोई काम नहीं बचा जो बह उस आदमी को दे सके. निराश होकर किसान ने कहा - अब मेरे पास कोई काम नहीं है. तुम वापस चले जाओ. मैं आपने काम स्वयं कर लूंगा. अब किसान रोज सुबह उठकर खेत पर जाता और सारे काम स्वयं से काम करता था. यह देखकर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई.

दो

लेखिका - कु. कविता कोरी

साधु - मै तुम्हें एक जिन्न देता हूँ जो हर क्षण तुम्हारे लिए कार्य करता रहेगा।
तथास्तु!! कह साधु वहां से चला गया।
किसान खुश था अब उसके पास जिन्न था।
जिन्न ने कहा "कुछ काम बताओ"?
किसान - जाओ खेत जोत दो। जिन्न खेत चला गया। किसान जैसे ही खाना खाने बैठा जिन्न वहां आ गया। जिन्न - काम पूरा हुआ मालिक "कुछ काम बताओ"?

किसान - जाओ बीज डाल दो । जिन्न खेत चला गया। जैसे ही किसान पहला निवाला खाने वाला था। जिन्न ने आकर कहा - काम पूरा हुआ। "कुछ काम बताओ"?

फिर किसान ने कहा अब कुछ काम नहीं है तुम आराम करो। तब जिन्न ने कहा कुछ काम बताओ वरना मै तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। किसान की सुधबुध चली गई। किसान जो भी काम देता जिन्न झट से कर देता।

तब किसान की पत्नी ने कहा और करो आलस्य व लालच।

किसान - अरे भाग्यवान कोसना बाद में पहले इस जिन्न को यहाँ से चलता करो। यह अभी आएगा और कहेगा "कुछ काम बताओ"।

पत्नी - पहले प्रण लो कि अब से आलस्य नहीं करोगे व स्वयं कार्य करोगे।

किसान - ठीक है।

जिन्न काम निपटाकर फिर आ गया।

जिन्न - काम पूरा हुआ।"कुछ काम बताओ"।

किसान की पत्नी ने कहा जिन्न भाईसाहब हमारे पास शेरू नाम का कुत्ता हैं तुम उसकी पूँछ सीधी कर दो बस बड़ी कृपा होगी।

जिन्न - बस इतनी सी बात मै अभी आया । तुम और कार्य तैयार रखो।

जिन्न चला जाता है।

किसान - भाग्यवान तुमने इतना सरल काम दे दिया उसे ?

पत्नी - तुमने कहावत नहीं सुनी है कि कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती ?

उधर जिन्न काफी प्रयास करता रहा पर पूँछ फिर से टेढ़ी हो जाती।

जिन्न थक हार कर वापस आता है व क्षमा माँगता है किसान की पत्नी उसे क्षमा कर हमेशा के लिए जाने को कहती है।

किसान की आदत सदा के लिए सुधर गयी।

शिक्षा - अधिक आलस्य सदा ही हानिकारक होता है व लालच बुरी बला होती है।

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी

अगले अंक के लिये हमारी अधूरी कहानी भी कविता कोरी जी ने ही भेजी है. इस कहानी को पूरा करके जल्दी से हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दो.

कंजूस सेठ

एक गांव में सत्यनारायण नाम का एक कंजूस सेठ रहता था। वह सभी से अपना काम मुफ्त में करवाने के लिए चालाकियाँ किया करता था। भोले भाले गांव वाले - करते थे। उससे बहुत परेशान रहा

एक दिन उस गांव में सुखसागर व रामसागर नाम के दो भाई काम की तलाश में आये. संयोगवश उन्होंने उसी सत्यनारायण सेठ से ही काम मांगा. सेठ मन ही मन खुश हुआ पर बाहरी दिखावा करते हुए बोला - चलो जाओ मेरे पास तुम्हारे करने लायक कोई काम नहीं है जो काम है. जो काम है वह तुम कर नहीं पाओगे. दोनों भाइयों को काम की अत्यंत आवश्यकता थी. दोनों ने कहा हम कर लेंगे. सेठ ने कहा यदि मेरे मन मुताबिक कार्य नहीं कर पाये तो एक माह तक तुम्हें बिना पैसे लिए काम करना होगा. दोनों भाई मान गए. सेठ ने जैसे ही तीनों काम बताए दोनों के होश उड़ गए.

पहला काम - दो जग, एक बड़ा व एक छोटा। बड़े जग को छोटे जग के अंदर डालना है।

दूसरा काम - कमरे में गीला अनाज है।

बिना दरवाजा खोले व अनाज को हाथ लगाए बगैर उसे धूप में सुखाना है।

तीसरा काम - मेरे सर के वजन जितनी तरबूज बाजार से खरीद कर लानी है ना कम ना ज्यादा।

क्या कहानी को पुरा करते हुए आप दोनों भाइयों की मदद कर सकते हैं?

वृक्ष हमारे परम सखा

लेखिका - श्रीमती सुनीला फेंकलिन

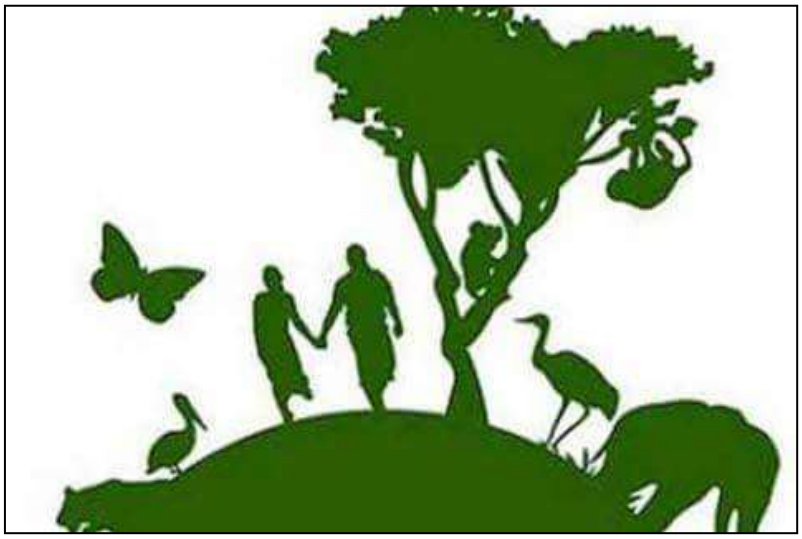

शुध्द करें पर्यावरण

दूर करें प्रदूषण

रोकें भूमि का क्षरण

सुन्दरता का करें वरण

मिले वृक्षों से प्राणवायु

फूले फले वन्य जीवन

पक्षी करें बसेरा इन पर

हैं यह जल-औषध के स्रोत

पर्वत का यह हैं श्रंगार

प्रकृति का अनुपम उपहार

गरमी आई

लेखक - कन्हैया साहू "अमित"

आसमान से आग बरसती,
धरती गरम तवे सी जलती।

झड़ते पत्ते पीले होकर,
हाँफें गर्मी से अब पीपल,

गरमी से मुश्किल है जीना,
टप टप टपके-अरे, पसीना।

शरबत, कुल्फी और मलाई,
घर के अंदर ही सब खाईं।

कुदरत की यह 'अमित' कहानी,
सुख-दुख की है यही निशानी।

गर्मी की छुट्टी में

लेखक - विरेन्द्र कुमार चौधरी, प्राथमिक शाला तिलाईदार

गर्मी की छुट्टी में

पढ़ाईलिखाई पर विराम-

खाने को मिलेंगे

पके आम और काले जाम

खेलेंगे हम, सुबह-शाम

दोपहर में, करेंगे आराम

माम के घर जायेंगे

और करेंगे हम आराम

बुरा नहीं ये सौदा मित्रों

लेखिका - देवयानी शुक्ला

बुरा नहीं ये सौदा मित्रों
रोपो कोई पौधा मित्रों
आओ उस बगिया को सींचें
जिसको हमने रौंदा मित्रों

धरती है हम सब की माता
वृक्ष हमारे बंधू भ्राता
अपने इस पावन कुटुम्ब के
हम ही बने पुरोधा मित्रों

हम सब पंछी एक डाल के
हिस्से हैं इस जग विशाल के
तिनकाजोड़ के-तिनका जोड़-
हम ही रचें घरौंदा मित्रों

प्रवेश उत्सव

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

नन्हे नन्हे पुष्पों से सब स्कूल सज जाएंगे

बच्चों के स्वागत में हम प्रवेश उत्सव मनाएंगे

तिलक लगाकर मस्तक पर, करतल ध्वनि बजाएंगे

बच्चों के स्वागत में हम, प्रवेश उत्सव मनाएंगे

सूर्य चंद्र से प्यारे बच्चे, भोले बच्चे न्यारे बच्चे

देश का ये ही गौरव हैं, देश का भाग्य संवारे बच्चे

देवतुल्य से बच्चों को, कुसुमहार पहनाएंगे

बच्चों के स्वागत में हम, प्रवेश उत्सव मनाएंगे

शाला की रौनक हैं बच्चे, मन के सच्चे दिल के अच्छे

राष्ट्र की हैं नीव यही, करते नवल सृजन हैं बच्चे

नवनिहाल के सपनों को हम आकार दिलाएंगे

बच्चों के स्वागत में हम, प्रवेश उत्सव मनाएंगे

नयी कोपलों से ये लाल, चहकें शाला में ग्वाल बाल

नवल पुहूप सी प्रियषा बाला ये हैं स्नेह प्रतिमा विशाल

मुस्कानों के मोती बिखेरकर तुम्हें हम गले लगाएंगें

बच्चो के स्वागत में हम, प्रवेश उत्सव मनाएंगे

सूरज दादा

लेखक - द्रोण साहू

सूरज दादा,सूरज दादा,

मुझको बाहर जाने दो,

खेल कूदकर आने दो,

मेरे बाहर जाने में तुम, प्लीज़ न आने देना बाधा ।

इतनी आग नहीं बरसाओ,

थोड़ी हम पर दया दिखाओ,

बादल के पीछे छुप जाओ,

इसके बदले दूँगा तुमको, आइसक्रीम का हिस्सा आधा ।

हर कोई अब झुलस रहा है,

पत्तापत्ता सुलग रहा- है,

अब तो प्लीज़ मान भी जाओ,

जितनी बची सभी ले जाओ, और नही है इससे ज्यादा।

<u>खिड़की</u>

लेखक - दिलकेश मधुकर

एक दिन मैं खिड़की पर खड़ी ।

दो घंटे से सोच में पड़ी ।।

तीन चोर भाग रहे थे ।

चार बैग पकड़ रखे थे ।।

पांच पुलिस दौड़ाकर पकड़े।

छछः डंडे उनको जकड़े ।। :

सात बजे तक चली पिटाई ।

आठ घंटे में हुई रिहाई ।।

नौ सौ रुपए जमा कराया ।

दस दिन बाद घर पहुंचाया ।।

सोच रही क्यों मार पड़ी ।

एक दिन मैं खिड़की पर खड़ी।।

महतारी महिमा

(चौपाई छंद)

लेखक - कन्हैया साहू "अमित"

ईश्वर तोर होय आभास,
महतारी हे जेखर पास।
बनथे बिगड़ी अपने आप,
दाई हरथे दुख संताप।।

दाई धरती मा भगवान,
देव साधना के वरदान।
दान धरम जपतप धन धान-,
दाई तोरे हे पहिचान।।

दाई ममता के अवतार,
दाई कोरा अमरित धार।
महतारी के नाँव तियाग,
दाई अँचरा सोन सुभाग।।

काबा काशी चारों धाम,
दाई देवी देवा नाम।
दाई गीता ग्रंथ कुरान,
मंत्र आरती गीत अजान।।

भाखा बोली हे अनमोल,
दाई मधुरस मिसरी घोल।
महतारी तुलसी सुर छंद,
दाई दया मया आनंद।।

दाई कागज कलम दवात,
महतारी लाँघन के भात।
मेटय सबके भूख पियास,
दाई पढ़थे सकल उदास।।

दाई थपकी लोरी गीत,
घाम जाड़ अउ गरमी सीत।
दाई मया मयारुक मीत,
दाई सुग्घर सुर संगीत।।

दाई आँखी काजर कोर,
गौरैया कस घर भर सोर।
दाई तुलसी चौरा मोर,
दाई बिन जिनगी कमजोर।।

जननी तैं जिनगी के मूल,
बिहना के तैं आरुग फूल।
माफी करथच सबके भूल,
चंदन तोर पाँव के धूल।।

महतारी बिन अमित अनाथ,
काबर छोड़े दाई साथ।
सुन्ना होगे अब संसार,
कोन पुरोही तोर दुलार।।

दाई तोरे जय जयकार,
महतारी तैं प्रान अधार।
अँधियारी मा तैं उजियार,
पायलगी हे बारंबार।।

<u>आगे जेठ बईसाख</u>

लेखक - रघुवंश मिश्रा

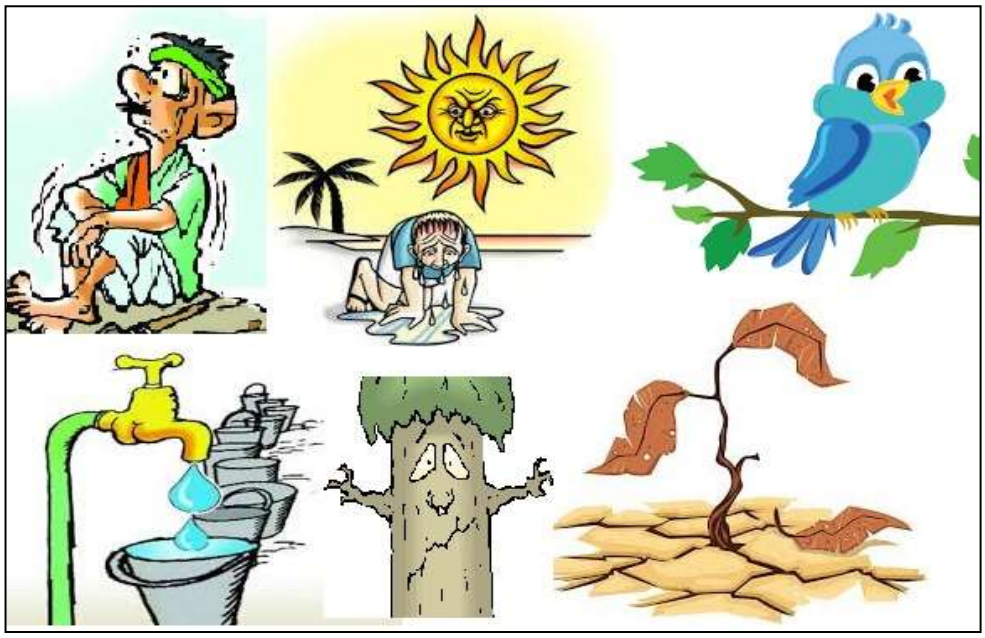

जेठ-बईसाख आगे, जेठ-बईसाख आगे न।

तरिया, डबरा, नदी, पोखर के, पानी घलो ह सुखागे ना।

जेठ-बईसाख आगे जहुरिया .....।।

लक,लक,लक,लक भूईंयां ह तिपै, हवा चले जोर-जोर जी।

होत मझनिया ले रात तक, करै सर-सर-सर-सर शोर जी।

जेखर कहल म लईकन तोका, डोकरा-डोकरी घलो झोलगे न।

जेठ-बईसाख आगे जहुरिया .....।।

ठंडा-ठंडा माटी के मरकी, खिर्चें सबके धियान जी।

मरे मिलतीस एखर पानी ह संगी, तव होतीस मरे बिहान जी।

पियत-पियत पानी ल सोचैं, अमरीत ह एमा समागे न।

जेठ-बईसाख आगे जहुरिया .....।।

छाता खुम्हरी काम न देवैं, रुखवा के छांव सुहावै जी।

गरुवा-बछरू, चिरई-चुरगुन, दउड़ ओखर तीर आवैं जी।

कोनौ जीव ल चैन नई हावैं, तड़पत दिन पहागे न।

जेठ-बईसाख आगे जहुरिया .....।।

प्रतिष्ठा

लेखिका - स्नेहलता 'स्नेह', सरगुजा

मान चाहती हूं, सम्मान चाहती हूं।

आज सिर्फ भ्रूण हूं, कल वर्तमान चाहती हूं।।

जमीं पर ही रह लूंगी मैं, नहीं आसमान चाहती हूं।

अधिक नहीं केवल, नौ महीने का मकान चाहती हूं।।

कोख में भी लड़ना होगा मुझे, हालातो से।

मिटाने वाले आघातों से।।

केवल जीने का अधिकार चाहती हूं।

चिड़ियाघर की सैर

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

रंगबिरंगे फूलों वाला

यह देखो उद्यान है

उधर पेड़ पर मजे उड़ाता

यह बन्दर शैतान है

फैले बूटे और लताएँ

झूल रही हैं बेल

आओ बच्चों आज करें हम

चिड़ियाघर की सैर।।

देखो झुंड-झुंड में

हिरनों की मतवाली चाल

ऊंची गर्दन वाला जिराफ़

वनभैंसे का सींग कमाल

कितने पक्षी कलरव करते

कल कल का गीत सुनाते हैं

और ताल में मछली मेढक

मगरमच्छ इठलाते हैं

खुशी मनाना मजे उड़ाना

रखना सबसे मेल

आओ बच्चो आज करे हम

हम चिड़ियाघर की सैर।।

नाव चढ़ेंगे झूला झूलें

और चढ़ें मीनार में

चिप्स, कुरकुरे और समोसे

ले लेंगे बाजार में

ध्यान रहे सब कचरा फेंके

हँसते कूड़ेदान में

और बजेगी सिटी लम्बी

दौड़ेगी बच्चों की रेल

आओ बच्चो करें आज हम

चिड़ियाघर की सैर।।

Row Your Boat

Row, Row, Row Your Boat

Row, row, row your boat
Gently down the stream.
Merrily, merrily, merrily, merrily,
Life is but a dream.

Row, row, row your boat
Gently down the stream.
If you see a crocodile,
Don't for get to scream!

सामान्य ज्ञान - पर्यावरण

लेखिका - श्रीमती सुचिता साहू

पर्यावरण शब्द का निर्माण 'परि' और 'आवरण' से मिलकर हुआ है. परि का मतलब है हमारे आसपास, और आवरण का मतलब है जो हमे चारों ओर से घेरे हुए है. इसका अर्थ हुआ कि पार्यवरण हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं को कहते हैं. यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन को प्रभावित करता है. मनुष्यों व्दारा की जाने वाली क्रियाएं भी पर्यावरण को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं. पर्यवरण और मावन का संबंध बहुत महत्वपर्ण है.

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है. पहला है, प्राकृतिक पर्यावरण और दूसरा है मानव निर्मित पर्यावरण. आज मानव के हस्तक्षेप के कारण विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन आदि. इन समस्याओं के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा असर हो रहा है. यह समस्याएं अब हमें अपनी जीवन शैली के बारे में पुर्नविचार के लिये प्रेरित कर रही हैं. पर्यरवरण संरक्षण और प्रबंधन की आवश्यकता से अब सभी सहमत हैं.

सामान्य ज्ञान - दर्शनीय पर्यटन स्थल रतनपुर

लेखक - दिलकेश मधुकर

बिलासपुर जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर की दूरी पर कटघोरा मार्ग पर रतनपुर स्थित है. प्राचीन काल में राजा रत्नदेव प्रथम ने मणिपुर नामक गांव को रतनपुर नाम देकर अपनी राजधानी बनाया. यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं: -

(1) **राम टेकरी** राम टेकरी -मंदिर का निर्माण मराठा राजा शिवाजीराव भोसले ने ने कराया था. यहां भगवान राम, सीता और हनुमान की शानदार ग्रेनाइट की मूर्तियां हैं. इस मंदिर के समीप बूढ़ा महादेव मंदिर, गिरजा बंद हनुमान मंदिर और बिकमा तालाब दर्शनीय हैं.

(2) **महामाया मंदिर** - यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है. यह मंदिर लगभग 12 वीं शताब्दी में निर्मित माना जाता है. नवरात्रों में मुख्य उत्सव तथा विशेष

पूजा अर्चना होती है. मंदिर जाने के पूर्व तीन भव्य प्रवेश व्दार हैं, जो अपनी कलाकृति के लिए अद्भुत हैं. मंदिर के समीप नौका विहार की सुविधा है. गार्डनों में सुंदर फूल लगे हैं.

(3) **गज किला** पुराना बस स्टैंड के पास राष्ट्रीय -राजमार्ग से लगा हुआ एतिहासिक किला हाथी अथवा गज किले के नाम से जाना जाता है. किले में लक्ष्मी नारायण मंदिर तथा जगन्नाथ मंदिर हैं. किले का जीर्णोध्दार पुरातत्व विभाग कर रहा है. इसके साथ ही यहां कलचुरी कालीन मूर्तियां, अप्सरा, गज एवं महा पराक्रमी गोपाल राय की एक विशाल प्रतिमा भी है. वर्तमान में यहां का सुंदर उपवन नगर वासियों का सायं कालीन मनोरंजन स्थल बना हुआ है.

(4) **लखनी देवी मंदिर** छत्तीसगढ़ में एकमात्र लक्ष्मी का प्राचीन मंदिर एकविरा - पहाड़ी रतनपुर कोटा मार्ग पर स्थित है. इकवीरा पर्वत वाराह पर्वत, श्री पर्वत व लक्ष्मी धाम पर्वत के नाम से भी जाना जाता है. इस मंदिर का निर्माण कलचुरी राजा रत्नदेव तृतीय प्रधानमंत्री गंगाधर ने सन 1179 में कराया था. इस पहाड़ी के ऊपर हनुमान जी की विशाल प्रतिमा है. समीप में भैरो बाबा मंदिर, खंडोबा मंदिर, दुलहरा तालाब एवं बादल महल देखने योग्य है।

(5) **खूंटाघाट बांध** यह बांध खारून नदी पर है -. इसे खारंग जलाशय भी कहते हैं. आसपास के जंगल और पहाड़ियां इस बांध के लिए अतिरिक्त आकर्षण का केंद्र - हैं. यह एक सुंदर पिकनिक स्थल है जहां हर साल हजारों पर्यटक आते हैं. यह बांध ब्रिटिशकालीन है तथा लगभग 1930 ईस्वी में बनाया गया था.

इनके अलावा राधा स्वामी मंदिर, सिध्दिविनायक मंदिर, कृष्णार्जुन तालाब, कका पहाड़, सिध्द बाबा मंदिर, गायत्री मंदिर नवागांव, कोसगाई मंदिर, कबीर कुटी, मस्जिद आदि देखने योग्य स्थल हैं।

बाल कामिक्स

प्राथमिक शाला ढोंगदरहा संकुल भैसमा जिला कोरबा (छ.ग.) से अशोक राठिया जी ने अपने स्कूल के बच्चों के बनाये हुए बड़े सुंदर बाल कामिक्स भेजे हैं. उनमें से दो हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं. अन्य सभी शिक्षकों से भी अनुरोध है कि यदि आपने भी बच्चों के साथ कोई नवाचार किया हो तो उसे किलोल के लिये अवश्य भेजें.

नाम मसुधा कवर
कक्षा - 3री स्कूल पा. शा.
हाथी भालू दोनो मे था सच्चा सच्चा मेल दोनों मिलकर खेल रहे थो
लुका छुपी का खेल हाथी बोली सुन भई भालू अब मैं छिपने जाता हूँ
पानी वाली जगाह मिलूंगा पक्की बात बताता हूं

पानी पर मुहावरे

संकलनकर्ता - दिलकेश मधुकर

(1) अधजल गगरी छलकत जाए ।

अर्थकम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है। -:

(2) अन्न जल छोड़ देना या त्याग देना ।

अर्थभोजन पानी ग्रहण ना करना। -:

(3) चुल्लू भर पानी में डूब मरना ।

अर्थअत्यंत लज्जात्मक स्थिति में होना। -:

(4) दाना पानी छोड़ना ।

अर्थ अन्य जल ग्रहण न करना। -:

(5) दाना पानी उठना ।

अर्थ-: दूसरी जगह जाने का सहयोग होना।

(6) पानी पानी होना।

अर्थलज्जित होना । -:

(7) पानी में आग लगाना ।

अर्थ शांति भंग कर देना। -:

(8) पानी फेर देना।

अर्थनिराश कर देना। -:

(9) पानी भरना ।

अर्थ तुच्छ लगना । -:

(10) जल में रहकर मगर से बैर होना ।

अर्थ किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना। -:

(11) दूध का दूध पानी का पानी होना ।

अर्थ सच और झूठ का सही फैसला होना।-:

<u>विज्ञान के खेल - आओ विद्युत चुंबक बनाएं</u>

एक तांबे के तार को लोहे की कील पर चित्र के अनुसार लपेट लो. अब इस तार का एक सिरा थेड़ा मोड़ लो. मुड़े हुए सिरे को एक बैटरी सेल की पाज़िटिव घुंडी पर चित्र के अनुसार लगाओ और दूसरे सिरे को सेल के निगेटिव साइड पर लगाओ.

बस आपका विद्युत चुंबक या इलेक्ट्रोमेगनेट तैयार हो गया. आप इसे किसी कपड़े से पकड़ें जिससे आपको बिजली का शाक न लगे. अब आप इस इलेक्ट्रोमेगनेट से सेफ्टी पिन जैसी लोहे की छोटी-छोटी वस्तुएं उठा सकते हैं.

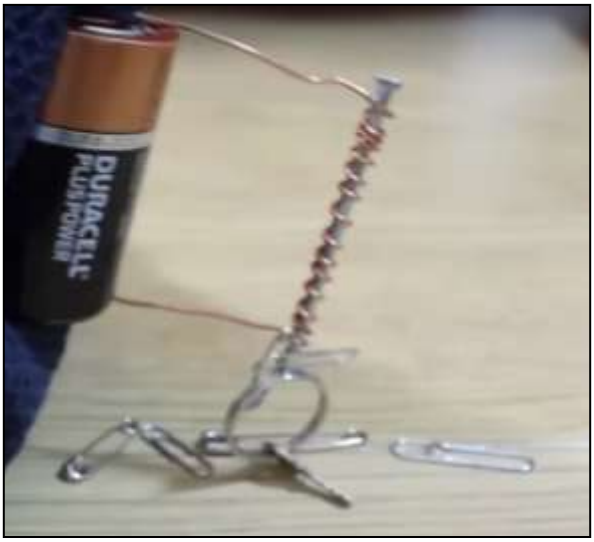

<u>इलेक्ट्रोमेगनेट कैसे काम करता है</u> - जब किसी चुंबकीय पदार्थ के चारों ओर कुंडली में बिजली की धारा का प्रवाह होता है तो उस चुंबकीय पदार्थ में चुंबकत्व उत्पन्न हो जाता है. इसे ही विद्युत चुंबकत्व कहते हैं और इस प्रकार बने हुए चुंबक को विद्युत चुंबक कहते हैं. इसमें चुंबकत्व केवल तभी तक रहता है जब तक बिजली की धारा का प्रवाह रहता है. बिजली की धारा का प्रवाह रुक जाने से चुंबकत्व समाप्त हो जाता है. इसलिये इस प्रकार का चुंबकत्व अस्थाई चुंबकत्व कहलाता है.

<u>विद्युत चुंबक के उपयोग</u> -

1. परम्परागत टीवी एवं कम्प्यूटर के मॉनिटर में, एलेक्ट्रॉन बीम को उपरनीचे - बगल मोडने के लिये विद्युत्चुम्बक का प्रयोग होता है-एवं अगल. इसी से छवि निर्माण सम्भव हो-पाता है.
2. लाउडस्पीकर एवं माइक्रोफोन में.
3. भारी खनिजों के लिये चुम्बकीय हस्त छन्नी.
4. विद्युत मोटर एवं विद्युत जनित्र में.
5. वस्तुओं को थामकर रखने के लिए.
6. बहुत से खिलौनो में.
7. चुम्बकों की सहायता से ऐसी चीजों को खोजने, पकड़ने एवं इकट्ठा करने में मदद मिलती है जो बहुत छोटी हैं, जिन तक हाथ नही जा सकता, या जिन्हें हाथ से पकड़ना कठिन है.
8. किसी कबाड़ से चुम्बकीय एवं अचुंबकीय पदार्थों को अलग करने के लिये.
9. चुम्बकीय लेविटेशन पर आधारित यातायात के लिये.

कला - आओ मास्क बनाएं

सामग्री - पेपर प्लेट या कार्ड बोर्ड, इलास्टिक, धागा, ऊन, रुई, रंगीन कागज, रिबन, गोंद, स्केच पेन और कलर्स.

विधि - कार्डबोर्ड से प्लेट के आकार के गोले काट लो. अगर तुम्हारे पास पहले से ही पेपर प्लेट हैं तो कहना ही क्या. अब स्केच पेन से इनका बार्डर कलर कर लो. इन गोलों के दोनों तरफ एक-एक छेद करके इनमें इलास्टिक या मजबूत धागा पिरो दो. इससे इन्हें चेहरे पर आसानी से बांधा जा सकेगा. आंखों के लिए छेद बनाओ. अब मास्क को अपनी रंग-रूप दो. यहाँ कुछ नमूने दिए गए हैं. बालों के लिए रुई, ऊन अथवा कागज की कतरन का इस्तेमाल कर सकते हो. चश्मे के लिए कार्डबोर्ड से काटी आकृति और रिबन/बो-टाई आदि के लिए पुराना रेशमी रिबन या कागज इस्तेमाल कर सकते हो. कोशिश करो कि यह मास्क तुम घर में मौजूद पुरानी चीजों से ही बनाओ और तुम्हें बाजार से कुछ न खरीदना पड़े. यह टास्क थोड़ा चैलेजिंग जरूर है, लेकिन मजा भी तो चैलेंज में ही आता है न !

आओं हंस लें

पप्पू कर मां की तबीयत खराब हुई तो उन्हें अस्पताल ले गए.

डाक्टर ने कहा - दो टेस्ट होंगे.

पप्पू ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा - हे भगवान अब क्या होगा !! मेरी मां तो अनपढ़ है.

विज्ञापनों की मम्मी कितनी अच्छी होती है.

बच्चे कपड़े गंदे करके आएं तो भी हंस कर धोती है.

बचपन में जब हम कपड़े गंदे करके आते थे, तो पहले हम धुलते थे, बाद में कपड़े !!

संता और बंता दोनो भाई एक ही क्लास मे पढ़ते थे.

अध्यापिका - तुम दोनो ने अपने पापा का नाम अलग-अलग क्यों लिखा ?

संता - मैडम आप फिर कहोगे कि नकल मारी है, इसलिए.

टीचर - बहुवचन किसे कहते हैं ?

पप्पू - तब बहू ससुराल बालों को खरी-खोटी सुनाती है तो उसे बहु वचन कहते हैं.

एक आदमी का सर फट गया. डाक्टर ने पूछा - यह कैसे हुआ ?

आदमी - मैं पत्थर से ईंट तोड़ रहा था तभी किसी ने कहा - कभी-कभी खोपड़ी का इस्तेमाल भी कर लिया कर.

वर्ग पहेली

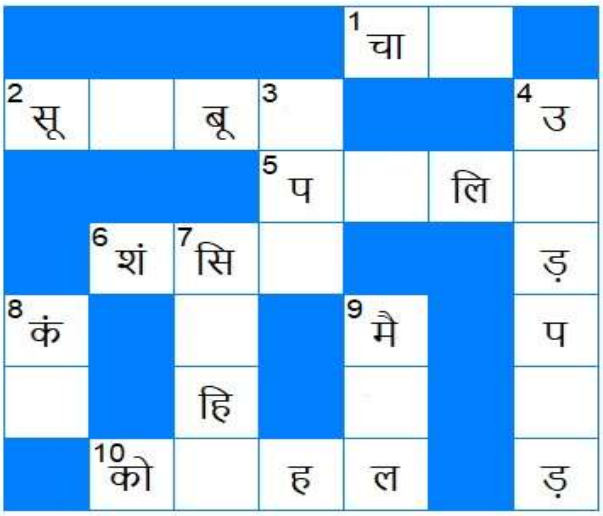

बाएँ से दाएँ

1. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषधि है
2. बुध्दि 5. शिक्षित 6. टिप्पणी, उपकथन 10. अनेक लोगों का बोलना

ऊपर से नीचे

3. हवा का झोंका, हल्की नींद 4. किसी कार्य को अस्त-व्यस्त करने की क्रिया
7. चिकना तथा फिसलनदार, कीचड़ के कारण रपटनवाला 8. कथरी, पुराने वस्त्रों को सिलकर बनाई गई ओढ़ने की चादर 9. मिथिला का निवासी, राजा जनक

उत्तर